بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 25.07.25

जलसा सालाना बर्तानिया 2025 से सम्बंधित कारकुनों तथा मेहमानों को स्वर्णिम उपदेश।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः 25 ,जौलाई 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आज शाम से इंशाल्लाह जलसा सालाना बर्तानिया की काररवाई नियमबद्ध रूप से आरम्भ होगी। यह जलसा, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है, अति महत्त्व पूर्ण है। इसमें जमाअत की ज्ञान सम्बन्धी, नैतिक एवं आध्यात्मिक स्थिति के विकास के लिए प्रोग्राम होते हैं। अल्लाह तआला सब शामिल होने वालों को इससे भरपूर लाभ प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करे। इस समय मैं जलसे में ड्यूटी देने वालों तथा शामिल होने वालों से कुछ बातें करूंगा।

इसलाम में मेहमानों के मान सम्मान के विषय में कड़ा आदेश है, आँहज़रत ﷺ ने भी इनके विषय में अति सचेत किया है। आप स. ने फ़रमाया कि मेहमान को उसके स्तर के अनुसार सेवा दो तथा यह उचित अधिकार सामर्थ्यानुसार कुछ दिनों के लिए उसकी मेहमान नवाज़ी है। आप स. की इसी नसीहत का प्रभाव था कि सहाबा रज़ी. क़ुर्बानी देकर अपना और अपने बीवी बच्चों का पेट काट कर, अपना हक़ छोड़ कर मेहमान नवाज़ी किया करते थे। अतः आजकल इन दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलै. के जो मेहमान जलसा सुनने आ रहे है, उनकी हर प्रकार से सेवा एवं आतिथ्य करना हर

कारकुन, हर ड्यूटी देने वाले और हर उस अफ़सर का दायित्व है, जो किसी भी विभाग में काम कर रहा है। इन दिनों में विशेष रूप से परिश्रम धैर्य एवं दुआ से काम लें। मेहमानों की ओर से यदि कभी कोई कठोर बात भी सुनें तो उच्च आचरण व्यक्त करते हुए, अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, अनदेखा करें। यहाँ विभिन्न विभाग हैं, मैंने पिछले ख़ुतबः में भी संक्षेप में बयान किया था कि हर विभाग का अफ़सर तथा उसके सहयोगी, अपने कर्तव्यों का प्रसन्नचित होकर एवं सुन्दर रंग में निर्वाह करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भी इसके विषय में अनेक घटनाएँ हैं। आप अलैहिस्सलाम विशेष रूप से यह निर्देश दिया करते थे कि मेहमानों से सुन्दर शिष्टाचार किस तरह करना है। आप अलै. के उपदेश एवं वृत्तांत आप अलै. के जीवन परिचय वाली पुस्तकों में, विभिन्न शैलियों में, विभिन्न स्थानों पर बयान हुए हैं। आसाम से आए हुए मेहमानों की मेहमान नवाज़ी की भी एक प्रसिद्ध घटना है कि आप अलै. ने किस प्रकार उनकी सेवा की। यह बात हम सुनते हैं और इसका हम आनन्द लेते हैं कि किस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने उनका ध्यान रखा, परन्तु यह समस्त कार्य-कर्ताओं, सभी ड्यूटी देने वालों तथा उन समस्त लोगों के लिए एक सबक़ है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करने के लिए अपने आपको पेश करते हैं।

इसी प्रकार मेहमान नवाज़ी का एक अन्य उदाहरण हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ रज़ी. बयान करते हैं कि मैं एक बार लाहौर से क़ादियान आया हुआ था, आप अलै. स्वंय अपने हाथ में मेरे लिए खाना लेकर आए और मुझे देख कर फ़रमाया कि आप खाना खाएं, मैं अभी पानी लेकर आता हूँ। कहते हैं कि उस समय भावुकता के कारण सहसा मेरे आंसू निकल गए कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारे अनुकरणीय एवं पेशवा होकर हमारे लिए यह सेवा कर सकते हैं तो हमें आपस में एक दूसरे की कितनी अधिक सेवा करनी चाहिए। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह केवल एक उदाहरण था और हज़रत मसीह मौऊद अलै. की सीरत में हमें मेहमान नवाज़ी के ऐसे अनेकों वृत्तांत मिलते हैं।

आप अलै. ने एक बार लोगों को फ़रमाया कि मेरा सदेव यह विचार रहता है कि किसी अतिथि को कष्ट न हो, बल्कि इसके लिए सदेव आग्रह करता रहता हूँ कि जहां तक हो सके मेहमान को आराम दिया जाए। मेहमान का दिल दर्पण के समान कोमल होता है जो तनिक सी ठेस लगने से टूट जाता है, तुम उसकी सुरक्षा का प्रबंध करो। अतएव यह है वह व्यवहार एवं उपदेश जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने अपने आक़ा के अनुसरण में मेहमानों के आतिथ्य के लिए हमें फ़रमाए हैं। एक बार आप अलै. ने लंगर ख़ाने के इंचार्ज से फ़रमाया कि देखो! अत्यधिक अतिथि आए हुए हैं, उनमें से कुछ लोगों को तुम जानते हो और कुछ लोगों को नहीं जानते, इस लिए उचित यह होगा कि सबको आदरणीय जान कर उनकी सेवा करो। अतः हर एक कारकुन को सदेव यह प्रयास करना चाहिए कि जिस जगह एवं जिस विभाग में भी उसकी ड्यूटी है, वहाँ वह अतिथियों के आतिथ्य का हक़ अदा करने का भरसक प्रयास करे।

भिन्न भिन्न विभाग हैं, टिकट बनाने से लेकर जलसा गाह तक आने के विभाग हैं, इन कारकुनों से महमानों को वास्ता पड़ता है, वहाँ हर कारकुन को सुन्दर शिष्टाचार एवं उच्च नैतिक आचरण की

अभिव्यक्ति करनी चाहिए। खाना पकाने तथा खाना खिलाने के विभाग हैं, इन विभागों को भी मेहमान नवाज़ी का हक़ अदा करना चाहिए, क्यूंकि ये मेहमान नवाज़ी के महत्त्व पूर्ण भाग हैं। एक तो यह कि प्रयास हो कि मेहमान को भर पेट भोजन कराया जाए तथा सम्मान पूर्वक खिलाया जाए। लंगर ख़ाने में काम करने वालों को उच्च श्रेणी का भोजन बनाने की कोशिश करनी चाहिए और इस बात को सुनिश्चित करना चाहिए कि आवश्यकतानुसार खाना उपलब्ध हो और कम न पड़ जाए। सफ़ाई सुथराई के विभाग में भरपूर ध्यान देना चाहिए, सफ़ाई भी ईमान का अंश है। कुछ लोगों में उचित बोध नहीं होता और वे पूर्णत्या जलसा नहीं सुनते, अनुशासन वालों को चाहिए, महिलाओं में भी तथा पुरुषों में भी कि इनको प्यार एवं विनयता से समझाएं। अतएव हर जगह इस बात का ध्यान रखना है कि कारकुन इन दिनों में सुन्दर आचरण का एक विशेष नमूना दिखाएं और हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने जो नेक गुमान फ़रमाया है, उसपर पूरा उतरने की कोशिश करें।

इसी तरह मैं कुछ बातें मेहमानों से भी कहना चाहता हूँ, यद्यपि कुछ जमाअत से बाहर के लोग भी अतिथि होकर यहाँ आते हैं, परन्तु इन कुछ लोगों के अतिरिक्त समस्त मेहमान जिनमें अधिकाँश संख्या अहमदियों की है, आप लोग यहाँ जलसा सुनने के लिए आए हैं, इस लिए इस बात को महत्त्व न दें कि व्यवस्था सटीक हुई है, मेहमान नवाज़ी अच्छी हुई है, अथवा किसी कारकुन ने कैसा व्यवहार किया है। मूल उद्देश्य तो आध्यात्मिक भोज को प्राप्त करना है और आप लोगों को उसी के लिए चेष्टा करनी चाहिए, यद्यपि आतिथ्य करने वालों को, मेहमान नवाज़ी का हक़ पूरी तरह अदा करने की कोशिश करनी चाहिए, और वे करते हैं, लेकिन इसी प्रकार शामिल होने वालों का भी यह काम है कि यदि कारकुनों में कोई कमियाँ अथवा कमज़ोरियां या त्रुटियाँ रह गई हों तो उनको अनदेखा करें। जब आप ऐसा करेंगे तो आप उस लक्ष्य को पाने वाले होंगे जिसके लिए आप लोग यहाँ आए हैं तथा इसके द्वारा आप लोगों के सम्बन्धों में भी निखार पैदा होगा, सब मेहमानों का ध्यान रखना चाहिए कि उनके यहाँ आने का उद्देश्य क्या है? और वह उद्देश्य उच्च नैतिक आचरण एवं अल्लाह तआला को याद करने से ही पूरा हो सकता है।

खाने की मार्की में हर मेहमान का दायित्व है कि खाने के सामान का सदेव आदर करना है। मेहमानों को चाहिए कि जलसा सालाना के दिनों में भोजन को बरकत समझ कर खाएं और सदेव इस बात का ध्यान रखें कि हमने भोजन को नष्ट होने से बचाना है और इस विधि से काम समेटने वालों के लिए भी सुविधा पैदा करनी है। सदा याद रखें कि जलसे के उद्देश्य को आपने पूरा करना है और उन बरकतों को समेटने और उनसे अपनी झोलियाँ भरने की कोशिश करनी है, जो बरकतें इस जलसे की हैं तथा जिन के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने इस जलसे को जारी फ़रमाया था। जैसा कि आप अलै. ने फ़रमाया है कि जो काम हो, अल्लाह तआला के लिए हो, और जो बात हो ख़ुदा के वास्ते हो। हर एक को इस नियम को सामने रखना चाहिए। इस बारे में भी याद रखें कि हमें अपने दिन अल्लाह की स्तुति में व्यतीत करने चाहिएँ, जलसा सुनते हुए भी अपनी ज़बानों को अल्लाह के ज़िक्र से तर रखें, बाद में चलते फिरते, मिलते जुलते भी, जो लोगों से बातें कर रहे होते हैं, उस समय भी केवल दीन के विषय में बातें हों, अल्लाह तआला की याद की बातें हों, और जब यह होगा तो फिर एक ऐसा वातावरण पैदा हो जाएगा, जो निःसन्देह वह वातावरण है जिसके लिए यह जलसा आयोजित किया

जा रहा है।

हुज़ूरे अनवर ने ध्यान दिलाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने इसके बारे में बड़ी चिन्ता प्रकट की है कि यदि तुम जलसे की कार्यवाही ध्यान पूर्वक नहीं सुनते तो तुम्हारा यहाँ जलसे पर आना कोई लाभप्रद नहीं है। इस बात को विशेष रूप से हमें याद रखना चाहिए कि हमारा उद्देश्य अपना सुधार करना है, अपने दीन के ज्ञान को बढ़ाना है, अपनी रूहानी स्थिति को सुन्दर बनाना है, और इसके लिए हमने भरसक प्रयास करना है, नैतिक रूप से भी अपने आपको सुदृढ़ करना है। अपने दोस्तों और भाईयों के लिए बलिदान की भावना पैदा करनी है और दिल के द्वेष को दूर करना है, और यह भी एक बड़ा उद्देश्य है। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह जो व्यवस्था हुई है और इसमें इतने हज़ार लोग जमा हैं, यह भी एक ऐसा वातावरण है कि यदि इसमें एक दूसरे से भलाई एवं बन्धुत्व का व्यवहार करेंगे तो वह स्थिति एवं वह अवस्था पैदा होगी जिसमें प्यार, मुहब्बत, बंधुत्व एवं सदभावना होगी, जो इसलाम की शिक्षा की विशेषता है तथा इसी के अनुसार कर्म करके ही इंसान अल्लाह तआला के समक्ष सफल एवं उसकी कृपाओं को ग्रहण करने वाला हो सकता है। अतएव इस सम्बन्ध में कारकुन भी एवं मेहमान भी, दोनों ध्यान दें कि हमारे नैतिक आचरण सदेव उच्चतम हों और हर उपद्रव से बचने के लिए सदेव दुआ करते रहना चाहिए।

हुज़ूरे अनवर ने जलसे के बारे में पड़ौसियों का ध्यान रखने, यातायात के नियमों की पाबंदी, सफ़ाई, बच्चों वाली महिलाओं से सम्बंधित तथा इसी प्रकार पार्किंग एवं गेट्स सहित कुछ अन्य बातों के विषय में नसीहतें फ़रमाईं। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला करे कि आप सब लोग इस जलसे से पूरा लाभ पाने वाले हों, इसकी बरकतों से लाभ प्राप्त करने वाले हों और जब यहाँ से वापस जाएं तो अपनी झोलियाँ भर कर वापस जाएं, जो अल्लाह तआला के फ़ज्लों को समेटने वाली हों। अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस बनते हुए आप लौटें। अल्लाह तआला जीवन में सदेव आप पर और आपकी नस्लों पर अपनी कृपा बरसाता रहे। सदेव अहमदिय्यत का एक लाभदायक अस्तित्व बन कर दुनिया में जीवन व्यतीत करने वाले हों और अल्लाह करे कि क़यामत तक यह क्रम जारी रहे।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी विभिन्न विभागों की ओर से प्रदर्शनियां हैं, और अच्छी ज्ञान वर्धक हैं, रूचिकर हैं, उन्हें भी देखने का प्रयास करें। इसी प्रकार बुक स्टाल पर नई पुस्तकें भी आई हुई हैं, वहाँ भी अवश्य जाएं। अंतराल के समय बाज़ारों में क्रय विक्रय न करें बल्कि इस रूहानी भोज से भी लाभान्वित होने की चेष्टा करें, अल्लाह तआला सबको तौफ़ीक़ दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब